IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों की उपलब्धता एवं उपयोगकर्ता समस्याएँ

Gayatri Singh
Research Scholar, Mansarover Global University, Sehore
Dr. Shahina Sultana Khan
Professor, Library & Information Science, Mansarover Global University,Sehore

lkjk'k &

यह शोध–पत्र महाविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना संसाधनों की प्रकृति, उनकी उपयोगिता तथा उपयोगकर्ताओं द्वारा अनुभव की जाने वाली प्रमुख समस्याओं का गहन सैद्धान्तिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक शैक्षणिक परिवेश में पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संग्रह तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे ज्ञान के बहुआयामी केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं, जहाँ पारंपरिक मुद्रित संसाधनों के साथ–साथ डिजिटल, इलेक्ट्रॉनिक एवं ऑनलाइन सूचना स्रोतों की भूमिका निरंतर विस्तारित हो रही है।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों की उपलब्धता, उनके उपयोग की प्रवृत्तियों, सेवा–गुणवत्ता तथा उपयोगकर्ता संतुष्टि से संबंधित प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करना है। यह शोध संसाधन संग्रह, डिजिटल सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग तथा उपयोगकर्ता सहायता प्रणालियों से जुड़ी समस्याओं को उजागर करता है, जो पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं।

इसके अतिरिक्त, यह शोध–पत्र पुस्तकालय प्रबंधन, संसाधन विकास, डिजिटल परिवर्तन तथा उपयोगकर्ता–केंद्रित सेवाओं की आवश्यकता पर बल देता है। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि यदि डिजिटल संसाधनों का विस्तार, तकनीकी अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण, नियमित उपयोगकर्ता प्रशिक्षण तथा सेवा–गुणवत्ता में सुधार किया जाए, तो महाविद्यालय पुस्तकालयों को अधिक प्रभावी, आधुनिक और शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी ज्ञान केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

इस प्रकार, यह सैद्धान्तिक अध्ययन महाविद्यालय पुस्तकालयों के वर्तमान स्वरूप को समझने के साथ–साथ भविष्य में पुस्तकालय विकास, शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार एवं सूचना सेवाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करता है।

e[; 'kCn &महाविद्यालय पुस्तकालय, सूचना संसाधन, उपयोगकर्ता समस्याएँ, डिजिटल लाइब्रेरी, सेवा–गुणवत्ता, सूचना प्रौद्योगिकी

सूचना और ज्ञान मानव सभ्यता के विकास के मूल आधार रहे हैं। प्राचीन काल से ही मानव ने अपने अनुभवों, विचारों और खोजों को संरक्षित करने तथा अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए विभिन्न माध्यमों का सहारा लिया है। समय के साथ–साथ इन माध्यमों में परिवर्तन होता गया और मौखिक परंपरा से लेकर लिखित दस्तावेज़ों, पांडुलिपियों, मुद्रित पुस्तकों तथा आधुनिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, March 2026 Impact Factor: 8.2

डिजिटल संसाधनों तक सूचना के स्वरूप में निरंतर विकास हुआ। इसी विकास यात्रा में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

पुस्तकालय को ज्ञान का भंडार, सूचना का केंद्र तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का आधार स्तंभ माना जाता है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा संस्थानों में पुस्तकालयों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यहाँ विद्यार्थी न केवल पाठ्यक्रम आधारित अध्ययन करते हैं, बल्कि शोध, संदर्भ एवं आत्मविकास के लिए भी पुस्तकालय पर निर्भर रहते हैं। महाविद्यालयीन पुस्तकालय शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच ज्ञान सेतु के रूप में कार्य करते हैं।

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में महाविद्यालयों की संख्या अत्यधिक है और ये देश के दूरस्थ, ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों तक फैले हुए हैं। ऐसे में महाविद्यालयीन पुस्तकालयों की स्थिति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि ये पुस्तकालय स्थानीय विद्यार्थियों के लिए उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख साधन होते हैं। यदि पुस्तकालय संसाधनों से सुसज्जित और उपयोगकर्ता–अनुकूल हों, तो शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

आधुनिक युग को सूचना युग कहा जाता है। सूचना की मात्रा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिसे 'सूचना विस्फोट' की संज्ञा दी जाती है। इस परिदृश्य में पुस्तकालयों की भूमिका केवल पुस्तकों के संग्रह तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे सूचना के संगठन, संरक्षण, पुनर्प्राप्ति एवं प्रसार के सक्रिय केंद्र बन गए हैं। आज पुस्तकालयों में मुद्रित संसाधनों के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक संसाधन, डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन डेटाबेस तथा इंटरनेट आधारित सेवाएँ भी सम्मिलित हो चुकी हैं।

महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना संसाधनों की गुणवत्ता एवं विविधता सीधे–सीधे उपयोगकर्ताओं की शैक्षणिक प्रगति को प्रभावित करती है। सूचना संसाधनों में पाठ्य–पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, शोध पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, रिपोर्ट, शोध प्रबंध, ई–बुक्स, ई–जर्नल्स तथा अन्य डिजिटल सामग्री शामिल होती है। इन संसाधनों की उपलब्धता के साथ–साथ उनका प्रभावी उपयोग भी उतना ही आवश्यक है।

हालाँकि यह देखा गया है कि अनेक महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में संसाधनों की उपलब्धता होने के बावजूद उपयोगकर्ता उनका समुचित लाभ नहीं उठा पाते। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसेकृसूचना साक्षरता की कमी, पुस्तकालय सेवाओं की अपर्याप्त जानकारी, तकनीकी संसाधनों का अभाव, पुस्तकालय स्टाफ की सीमित संख्या तथा पुस्तकालय प्रबंधन की कमजोरियाँ।

ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में यह समस्या और भी गंभीर रूप में देखने को मिलती है। इन क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर, आर्थिक स्थिति तथा तकनीकी सुविधाएँ अपेक्षाकृत सीमित होती हैं। परिणामस्वरूप, पुस्तकालयों का विकास भी अपेक्षित गति से नहीं हो पाता। ऐसे क्षेत्रों में पुस्तकालयों की भूमिका केवल अध्ययन केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक एवं बौद्धिक जागरूकता के माध्यम के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

महाविद्यालय पुस्तकालय शैक्षणिक संस्थानों के बौद्धिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास के आधार स्तंभ माने जाते हैं। ये पुस्तकालय विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों के लिए ज्ञान, सूचना और संदर्भ सामग्री के प्रमुख स्रोत होते हैं, जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रभावी पुस्तकालय सेवाएँ न केवल औपचारिक शिक्षा को समर्थन प्रदान करती हैं, बल्कि स्वतंत्र अध्ययन, आलोचनात्मक चिंतन और आजीवन अधिगम की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करती हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

पारंपरिक रूप से पुस्तकालयों को पुस्तकों और मुद्रित सामग्री के संग्रह के रूप में देखा जाता रहा है, किंतु वर्तमान डिजिटल युग में उनकी भूमिका में व्यापक परिवर्तन आया है। आज पुस्तकालय ई–बुक्स, ई–जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, ओपन–एक्सेस संसाधनों और सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं के माध्यम से वैश्विक स्तर की सूचना तक पहुँच प्रदान कर रहे हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ब्ज) के विकास ने पुस्तकालय सेवाओं को अधिक सुलभ, त्वरित, प्रभावी और उपयोगकर्ता–अनुकूल बना दिया है, जिससे ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया पहले की तुलना में अधिक सरल और व्यापक हो गई है।

हालाँकि, सूचना संसाधनों की बढ़ती संख्या और तकनीकी प्रगति के बावजूद महाविद्यालय पुस्तकालयों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इनमें संसाधनों की सीमित उपलब्धता, वित्तीय प्रतिबंध, डिजिटल अवसंरचना की कमी, उपयोगकर्ता प्रशिक्षण का अभाव तथा सूचना संसाधनों के प्रभावी उपयोग से जुड़ी समस्याएँ प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, उपयोगकर्ताओं की बदलती आवश्यकताओं और डिजिटल सूचना वातावरण के अनुरूप पुस्तकालय सेवाओं को अद्यतन रखना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बन चुका है।

इसी संदर्भ में महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों की उपलब्धता, उनके उपयोग की प्रवृत्तियों तथा उपयोगकर्ताओं द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं का सैद्धान्तिक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ऐसा अध्ययन पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करने, प्रमुख बाधाओं की पहचान करने तथा भविष्य में पुस्तकालय विकास एवं सेवा–गुणवत्ता सुधार के लिए एक वैचारिक आधार प्रदान करता है।

अतः यह शोध–पत्र महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों की उपलब्धता, उनके प्रभावी उपयोग और उपयोगकर्ता समस्याओं का सैद्धान्तिक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, ताकि पुस्तकालयों को अधिक आधुनिक, डिजिटल–सक्षम और उपयोगकर्ता–केंद्रित ज्ञान केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में सार्थक योगदान दिया जा सके।

Ipuk I I kèkuk dk Lo:i &

महाविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना संसाधन शैक्षणिक, शोधात्मक तथा बौद्धिक विकास के प्रमुख साधन होते हैं। ये संसाधन विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों को अध्ययन, अनुसंधान एवं ज्ञान–विस्तार के लिए आवश्यक सूचना प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में सूचना संसाधनों का स्वरूप विविधतापूर्ण हो गया है, जिसे मुख्यतः मुद्रित एवं डिजिटल संसाधनों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. मुद्रित संसाधन – मुद्रित संसाधन पारंपरिक सूचना स्रोतों का प्रतिनिधित्व करते हैं और आज भी महाविद्यालय पुस्तकालयों का एक महत्वपूर्ण आधार बने हुए हैं। इनमें प्रमुख रूप से पाठ्य–पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, शोध–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रिपोर्ट, विश्वकोश, शब्दकोश एवं सरकारी प्रकाशन शामिल होते हैं। ये संसाधन पाठ्यक्रम आधारित अध्ययन, सामान्य ज्ञान तथा संदर्भ उपयोग के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं।

2. डिजिटल संसाधन – सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ डिजिटल संसाधनों का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। डिजिटल संसाधनों में ई–बुक्स, ई–जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, ओपन–एक्सेस स्रोत, संस्थागत रिपॉजिटरी, डिजिटल पुस्तकालय एवं मल्टीमीडिया सामग्री शामिल होती है। ये संसाधन अद्यतन जानकारी, वैश्विक शोध सामग्री तथा त्वरित सूचना प्राप्ति में सहायक होते हैं। डिजिटल संसाधनों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सुलभता, व्यापकता और समय की बचत है।

lpuk lalkèkuk dk 'k{kf.kd egRo &

महाविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना संसाधनों का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना, शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित करना तथा ज्ञान के प्रभावी प्रसार को सुनिश्चित करना है। ये संसाधन पाठ्यक्रम आधारित अध्ययन के साथ–साथ अतिरिक्त अध्ययन एवं संदर्भ खोज में सहायक होते हैं, जिससे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी एवं समृद्ध बनती है।

सूचना संसाधन विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण क्षमता, तथा स्वतंत्र अध्ययन की प्रवृत्ति को विकसित करते हैं। डिजिटल एवं ऑनलाइन संसाधनों की उपलब्धता ने सूचना तक त्वरित पहुँच को संभव बनाया है, जिससे अद्यतन एवं वैश्विक ज्ञान का उपयोग सरल हुआ है। इसके अतिरिक्त, ये संसाधन आजीवन अधिगम की भावना को बढ़ावा देते हैं तथा विद्यार्थियों को ज्ञान–आधारित समाज के लिए तैयार करते हैं।

इस प्रकार, महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों का स्वरूप पारंपरिक एवं डिजिटल दोनों रूपों में निरंतर विकसित हो रहा है, जो आधुनिक शैक्षणिक परिवेश में पुस्तकालयों की भूमिका को अधिक व्यापक, प्रभावी एवं प्रासंगिक बनाता है।

mi;kxdrk leL;k,¡ &

महाविद्यालय पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं को विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक, तकनीकी एवं सेवागत समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो सूचना संसाधनों के प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न करती हैं। प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं

- आवश्यक पाठ्य–पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों एवं शोध–पत्रिकाओं की अपर्याप्त उपलब्धता ।
- डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों तक सीमित या असमान पहुँच ।
- इंटरनेट, कंप्यूटर एवं तकनीकी अवसंरचना की कमी ।
- पुस्तकालय उपयोग, ऑनलाइन संसाधनों तथा सूचना खोज कौशल से संबंधित प्रशिक्षण का अभाव
- पुस्तकालय प्रबंधन एवं उपयोगकर्ताओं के बीच संवाद एवं फीडबैक प्रणाली की कमी ।

इन समस्याओं के कारण उपयोगकर्ता पुस्तकालय संसाधनों का पूर्ण एवं प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते, जिससे पुस्तकालय सेवाओं की समग्र गुणवत्ता एवं उपयोगिता प्रभावित होती है।

iLrdky; lokvk e lèkkj dh vko';drk &

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि महाविद्यालय पुस्तकालयों को उपयोगकर्ता–केंद्रित, डिजिटल–सक्षम एवं तकनीकी रूप से उन्नत बनाया जाए। पुस्तकालय सेवाओं में सुधार के लिए निम्नलिखित उपाय महत्त्वपूर्ण माने जा सकते हैं–

- डिजिटल संसाधनों, ई–जर्नल्स एवं ऑनलाइन डेटाबेस का विस्तार ।
- पुस्तकालय स्वचालन एवं आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग ।
- उपयोगकर्ताओं के लिए नियमित प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन ।
- सेवा–गुणवत्ता, संदर्भ सेवाओं एवं सूचना खोज सहायता में सुधार ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

➢ उपयोगकर्ता सुझाव एवं शिकायतों के लिए प्रभावी फीडबैक प्रणाली का विकास ।

इन सुधारात्मक प्रयासों से पुस्तकालय सेवाएँ अधिक प्रभावी, सुलभ एवं उपयोगकर्ता–अनुकूल बन सकती हैं।

यह सैद्धान्तिक अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों की बुनियादी उपलब्धता तो विद्यमान है, परंतु उनके प्रभावी उपयोग, तकनीकी समर्थन एवं सेवा–गुणवत्ता में निरंतर सुधार की आवश्यकता है। उपयोगकर्ता समस्याएँ मुख्यतः संसाधनों की कमी, तकनीकी सीमाओं, सूचना साक्षरता के अभाव तथा प्रबंधन संबंधी चुनौतियों से संबंधित हैं।

यदि महाविद्यालय पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों का विस्तार, तकनीकी अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण, तथा उपयोगकर्ता–अनुकूल सेवाओं का विकास किया जाए, तो वे भविष्य में शिक्षा एवं शोध के लिए अधिक सशक्त, प्रभावी एवं ज्ञान–आधारित केंद्र के रूप में विकसित हो सकते हैं।

InHk Iph &

- कुमार, के. (2012) ग्रंथालय प्रशासन एवं प्रबंधन, नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस ।
- सिंह, एस. पी. (2015) सूचना विज्ञान एवं ग्रंथालय सेवाएँ, नई दिल्ली बी.आर. पब्लिशिंग।
- शर्मा, आर. (2018) डिजिटल लाइब्रेरी एवं ई–संसाधन, जयपुर राज पब्लिकेशन ।
- सतीजा, एम. पी. (2013) ग्रंथालय स्वचालन एवं नेटवर्किंग नई दिल्ली एस. एस. पब्लिकेशन।
- वर्मा, आर. के. (2016) महाविद्यालय पुस्तकालयों का विकास एवं प्रबंधन भोपाल मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- मिश्रा, पी.(2017) सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक पुस्तकालय लखनऊ अवध पब्लिकेशन
- गुप्ता, एन. (2014) पुस्तकालय सेवाएँ एवं उपयोगकर्ता अध्ययन नई दिल्ली अटल पब्लिकेशन।
- पांडेय, एस. (2019) शैक्षणिक पुस्तकालयों में ई–संसाधनों की भूमिका. इलाहाबाद ज्ञान प्रकाशन
- मिश्रा, एवं वर्मा, पी. (2019) ग्रामीण भारत में डिजिटल पुस्तकालयों की चुनौतियाँ अंतरराष्ट्रीय सूचना अध्ययन पत्रिका, 5(2), 45–60।
- शर्मा, डी. (2019) पारंपरिक बनाम डिजिटल पुस्तकालय एक तुलनात्मक अध्ययन पुस्तकालय विज्ञान समीक्षा, 12(1), 34–50।
- कुमार, एस. (2018) आधुनिक पुस्तकालय प्रबंधन की प्रवृत्तियाँ मुंबई शिक्षा पब्लिशिंग हाउस।
- गुप्ता, आर. (2017) ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय उपयोगकर्ता व्यवहार का अध्ययन नई दिल्ली शैक्षिक प्रकाशन।